संधि contd.

30. लोपः शाकल्यस्य — 8|3|19.

यह विधिसूत्र है। यह सूत्र पाणिनि के पूर्ववर्ती आचार्य शाकल्य का मत है। पाणिनि ने जहाँ भी अन्य आचार्यों के मतों का उल्लेख किया है, वहाँ उनका ग्रहण विकल्प से ही किया है, इसलिए सूत्र में 'वा' का उल्लेख आवश्यक नहीं होता।

सूत्र का अर्थ है यदि अ और आ के पर 'अश्' प्रत्याहार (अइउण — जबगडदश्) रहने पर 'यकार' और 'वकार' का लोप विकल्प से होता है। यथा - हर इह, हरयिह। विष्णु इह, विष्णविह।

31. पूर्वत्रासिद्धम् — 8|2|2

यह अधिकार सूत्र है, जिसका क्षेत्र अष्टम अध्याय पर्यन्त है।

हर इह, हरयिह — हरे इह — 'एचो...' से 'ए' के स्थान पर 'अय्' आदेश होने पर, हर + अय् + इह = हरयिह, विकल्प से 'लोपः शाकल्यस्य' से यि का लोप होने पर 'हर इह' रूप बनता है और जहाँ विकल्प से लोप नहीं होता है वहाँ 'हरयिह' रूप सिद्ध होता है।

32. 'वृद्धिरादैच' — (1|1|1)

यह विधिसूत्र है। यह अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र है, जिसमें 'वृद्धिः' पद का प्रयोग हुआ है, यह मंगल बोध के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। शास्त्रों के आदि, मध्य और अन्त में मंगला-चरण होने से वे प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। इनके रचयिता दीर्घायु तथा पाठक सफल होते हैं।

सूत्र का अर्थ है - 'आ', 'ऐ' और 'औ' वृद्धि कहलाते हैं।

33. वृद्धिरेचि — 6|1|88

यह विधिसूत्र है। इसका अर्थ है- यदि 'अ' के परे 'ए', 'ओ' रहे तो पूर्व और पर के स्थान पर एक वृद्धि आदेश हो जाता है। यह सूत्र 'आद् गुणः' का अपवाद है। यथा - 'कृष्णैकत्वम्' (कृष्ण की एकता) — कृष्ण + एकत्वम् — अत्यन्त सादृश्यता के कारण 'वृद्धिरेचि' से 'अ' और 'ए' के स्थान पर वृद्धि होकर 'कृष्णैकत्वम्' रूप सिद्ध हुआ।

(b) गंगौघः — गंगा + ओघः
(c) देवैश्वर्यम् — देव + ऐश्वर्यम्
(d) कृष्णौत्कण्ठ्यम् — कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्

} Same as कृष्णैकत्वम्

34. एत्येधत्यूठ्सु (6।1।89)

यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है यदि 'अ' के परे 'एच्' (ए ओङ्, ऐ औच्) हो तथा 'इण्', 'एध्', तथा 'ऊठ' धातु भी हो तो पूर्व या पर वर्ण के स्थान पर वृद्धि एकादेश हो जाता है। यथा - उपैति — उप + एति। यहाँ पर 'एङि पररूपम्' से पररूप की प्राप्ति थी किन्तु 'एत्येधत्यूठ्सु' सूत्रानुसार अत्यन्त सादृश्य के कारण अ और ए के स्थान में 'ऐ' वृद्धि होने पर — 'उपैति' रूप बनता है।

(b) उपैधते — उप + एधते।
(c) प्रष्ठौहः — प्रष्ठ + ऊहः। 'वाह ऊठ्' से वाह् को ऊठ आदेश हुआ। Same as उपैति।

वा० - 1 — अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् — यदि अक्ष शब्द के बाद (ऊहिनी) शब्द हो तो पूर्व और पर वर्ण के स्थान में (अ+ऊ) वृद्धि (औ) हो जाती है। यथा - ~~प्रौढः — प्र + ऊढः~~ अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी सेना — 'पूर्वपदात् संज्ञायामगः' सूत्र से 'णत्व' हो जाता है।

Meena Pathak
Deptt. of Skt.
B.A. Ist Yr.

Scanned with CamScanner